पाठ - 38

एवरेस्ट विजेता

तेनजिंग

‘‘प्रातः काल मौसम बिल्कुल साफ था, वे चल पड़े। जैसे-जैसे वे चढ़ाई चढ़ रहे थे, साँस लेने में कठिनाई हो रही थी। वे प्यास से बेहाल थे। अब केवल 300 फुट की चढ़ाई बाकी थी। उनके सामने सबसे बड़ी चुनौती थी, एक बड़ी सी खड़ी चट्टान को पार करना। इसे पार करते समय बर्फ खिसकने का खतरा था। मगर उनके हौंसले और दृढ़-संकल्प के आगे चट्टान को भी घुटने टेकने पड़े।’’

शेरपा तेनजिंग, हिमालय की गोद में पले एक साधारण व्यक्ति थे, जिन्होंने अपने आत्म-विश्वास के बल पर असंभव को संभव कर दिखाया। हालाँकि उन्हें पढ़ने-लिखने का अवसर नहीं मिला फिर भी वे कई भाषाएँ बोल सकते थे। वे बचपन से ही हिमालय की ऊँची-ऊँची चोटियों पर घूमने के स्वप्न देखा करते थे।

तेनजिंग का बचपन याकों के विशाल झुण्डों की रखवाली में बीता। याकों से वस्त्रों के लिए ऊन, जूतों के लिए चमड़ा, ईंधन के लिए गोबर तथा भोजन के लिए दूध, मक्खन एवं पनीर मिलता था। पहाड़ों की ढलानों पर चराते-चराते वे याकों को अट्ठारह हजार फुट की ऊँचाई पर ले जाया करते थे, जहाँ दूर-दूर तक हिममण्डित ऊँची-ऊँची चोटियाँ दिखाई पड़ती थीं। उनमें सबसे उन्नत चोटी थी-'शोभो लुम्मा'। उनके देशवासी एवरेस्ट को इसी नाम से पुकारते थे। 'शोभो लुम्मा' के बारे में यह बात प्रचलित थी कि कोई पक्षी भी इसके ऊपर से उड़ नहीं सका है। तेनजिंग इस अजेय पर्वत-शिखर पर चढ़ने और इस पर विजय प्राप्त करने का सपना देखने लगे। धीरे-धीरे यह स्वप्न उनके जीवन की सबसे बड़ी अभिलाषा बन गईं

तेनजिंग को पर्वतारोहण का पहला मौका सन् 1935 ई0 में मिला। उस समय वे मात्र इक्कीस वर्ष के थे। उन्हें अंग्रेज पर्वतारोही शिष्टन के दल के साथ कार्य करने के लिए चुना गया। काम मुश्किल था। बार-बार नीचे के शिविर से ऊपर के शिविर तक भारी बोझ लेकर जाना होता था। अन्य शेरपाओं की तरह वे भी बोझ ढोने के अभ्यस्त थे। पहाड़ों पर चढ़ने का यह उनका पहला अनुभव था। कई बातें बिल्कुल नई और रोमांचक थी। उन्हें विशेष प्रकार के कपड़े, जूते और चश्मा पहनना पड़ता था और टीन के डिब्बों में बन्द विशेष प्रकार का भोजन ही करना होता था। उनका बिस्तर भी अनोखा था। देखने में यह एक बैग जैसा प्रतीत होता था। उन्होंने चढ़ने की कला में भी बहुत कुछ नई बातें सीखीं। नवीन प्रकार के उपकरणों के प्रयोग, रस्सी व कुल्हाड़ियों का उपयोग और मार्गों को चुनना आदि ऐसी ही बातें थी, जिन्हें जानना आवश्यक था।

और सपना सच हुआ .....

सन् 1953 ई0 में तेनजिंग को मौका मिला कि वह अपने बचपन का सपना पूरा कर सकें। उन्हें एक ब्रिटिश पर्वतारोही दल में सम्मिलित होने का आमंत्रण मिला। दल का नेतृत्व कर्नल हंट कर रहे थे। इस दल में कुछ अंग्रेज और दो न्यूजीलैंड वासी थे, जिनमें एक एडमंड हिलेरी थे।

वे अभियान की तैयारी में जुट गए। स्वयं को इसके लिए तैयार करना शुरू कर दिया। वे प्रातःकाल उठकर पाषाण-खंडों से एक बोरा भरते और इसे लेकर पहाड़ियों पर ऊपर-नीचे चढ़ने-उतरने का अभ्यास करते रहे। उन्होंने 'करो या मरो' का दृढ़ संकल्प कर लिया था। दार्जिलिंग से प्रस्थान करने के लिए मार्च 1953 की तिथि निश्चित हुई। उनकी पुत्री नीमा ने साथ ले जाने के लिए एक लाल-नीली पेन्सिल दी, जिससे वह स्कूल में काम करती थी।

एक मित्र ने राष्ट्रीय-ध्वज दिया। तेनजिंग ने दोनों वस्तुएँ एवरेस्ट शिखर पर स्थापित करने का वचन दिया।

वे भरपूर आत्म-विश्वास एवं ईश्वर में दृढ़ आस्था के साथ 26 मई 1953 को प्रातः साढ़े छः बजे आगे बढ़े। सुरक्षा के लिए उन्होंने रेशमी, ऊनी और वायुरोधी तीनों प्रकार के मोजे पहन रखे थे। संयुक्त राष्ट्र संघ, ग्रेट ब्रिटेन, नेपाल और भारत के चार झण्डे उनकी कुल्हाड़ी से मजबूती से लिपटे हुए थे। उनकी जैकेट की जेब में उनकी पुत्री की लाल-नीली पेन्सिल थी।

जब केवल 300 फुट और चढ़ना शेष था तो एक बड़ी बाधा आयी। यह एक खड़ी चट्टान थी। पहले हिलेरी एक सँकरी और ढालू दरार से होकर इसकी चोटी पर पहुँचे फिर तेनजिंग ने यहाँ कुछ समय विश्राम किया। उनका लक्ष्य समीप था। हृदय उत्साह और उत्तेजना से भर उठा । वे चोटी के नीचे कुछ क्षण रुके.....ऊपर की ओर देखा और फिर बढ़ चले। तीस फुट की एक रस्सी के सिरे दोनों के हाथ में थे। उन दोनों में दो मीटर से अधिक अंतर न था। धैर्य के साथ आगे बढ़ते हुए वे प्रातः साढ़े ग्यारह बजे संसार के सर्वोच्च शिखर एवरेस्ट की चोटी पर पहुँच गए।

एवरेस्ट की चमकती चोटी पर खड़े तेनजिंग व हिलेरी का मन हर्ष एवं विजय की भावना से भर उठा। ऐसा दृश्य उन्होंने जीवन में कभी नहीं देखा था। वे अभिभूत हो उठे। तेनजिंग ने राष्ट्र ध्वज बर्फ में गाड़े और कुछ मिठाइयाँ व बेटी की दी हुई पेंसिल बर्फ में गाड़ दी। उन्होंने भगवान को धन्यवाद दिया और मन ही मन अपनी सकुशल वापसी की प्रार्थना की।

एवरेस्ट से लौटने पर नेपाल नरेश ने उन्हें राजभवन में निमंत्रित किया और 'नेपाल-तारा' पदक पहनाया। भारत में भी उनका भव्य स्वागत हुआ। तत्कालीन प्रधानमंत्री पण्डित जवाहर लाल नेहरू ने पर्वतारोहियों के सम्मान में एक स्वागत-समारोह आयोजित किया।

4 नवम्बर, 1954 ई0 को पण्डित नेहरू ने हिमालय माउंटेनियरिंग इंस्टीट्यूट का उद्घाटन किया। तेनजिंग ने विदेश जाकर प्रशिक्षण प्राप्त किया और इस संस्थान के निदेशक बने। वे भारत के सद्भावना राजदूत भी रहे। सेवानिवृत्ति के बाद उन्होंने सलाहकार के रूप में अपने अनुभव से संस्थान को लाभान्वित किया।

उनके अदम्य साहस और संकल्प में दृढ़ता के कारण उन्हें 'बर्फ का शेर' कहा जाता है। मार्कोपोलो, कोलम्बस, वास्कोडिगामा, यूरी गागरिन, पियरी जैसे साहसिक अभियानों

के नेतृत्वकर्ता की भाँति तेनजिंग का नाम भी सदैव इतिहास में अमर रहेगा।

एवरेस्ट के बारे में.....

इस पर्वत शिखर को यह नाम भारतीय सर्वे विभाग के प्रमुख सर जार्ज एवरेस्ट के सम्मान में प्रदान किया गया।

बछेंद्रीपाल

शेरपा तेनजिंग द्वारा एवरेस्ट विजय के ठीक इकतीस वर्ष बाद एक बार फिर भारतीयों ने एवरेस्ट विजय का इतिहास रचा। यह अवसर था किसी भारतीय महिला द्वारा एवरेस्ट शिखर पर पहुँचने का। 23 मई, सन् 1984 का दिन सम्पूर्ण भारत एवं विशेषकर नारी जगत के लिए गौरव और सम्मान का दिन था। इसी दिन प्रथम भारतीय महिला बछेन्द्री पाल ने एवरेस्ट की चोटी पर कदम रखा।

उत्तर काशी (उत्तराखण्ड) के नाकुरी गाँव में 24 मई 1954 को जन्मी बछेंद्री पाल ने साहस और दृढ़ निश्चय का परिचय देते हुए एवरेस्ट शिखर तक पहुँचने में सफलता प्राप्त की। इन्हें बचपन से ही पर्वत बहुत आकर्षित करते थे। जब ये एम0 ए0 की पढ़ाई कर रहीं थी उनके मन में पर्वतराज हिमालय की सबसे ऊँची चोटी एवरेस्ट पर विजय प्राप्त करने की इच्छा बलवती हुई। अपने इस स्वप्न को पूरा करने के उद्देश्य से इन्होंने नेहरू पर्वतारोहण संस्थान से पर्वतारोहण का प्रशिक्षण प्राप्त किया। इन्होंने बड़ी लगन, मेहनत से पर्वतारोहण के गुर सीखे और कुशलता प्राप्त की। एवरेस्ट यात्रा से पूर्व, इन्होंने नेहरू पर्वतारोहण संस्थान द्वारा आयोजित 'प्री-एवरेस्ट ट्रेनिंग कैम्प-कम-एक्सपीडिशन' में भी भाग लिया।

आखिरकार 23 मई सन् 1984 ई0 को वह शुभ दिन आ गया जिसका स्वप्न पाल ने बचपन से देखा था, अपने लक्ष्य को पाने के लिए कठिन परिश्रम से प्रशिक्षण प्राप्त किया

था। उन्होंने पर्वत विजय करके यह सिद्ध कर दिया कि महिलाएँ किसी क्षेत्र में पुरुषों से पीछे नहीं हैं। उनमें साहस और धैर्य की कमी नहीं है। यदि महिलाएँ ठान लें तो कठिन से कठिन लक्ष्य भी प्राप्त कर सकती हैं।

एवरेस्ट विजय अभियान में बछेन्द्री पाल को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। यह साहसिक अभियान बहुत जोखिम भरा था। इसमें कितना जोखिम था इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि अंतिम चढ़ाई के दौरान उन्हें साढ़े छः घंटे तक लगातार चढ़ाई करनी पड़ी। इनकी कठिनाई तब और बढ़ गई जब इनके एक साथी के पाँव में चोट लग गई। इनकी गति मंद पड़ गई थी तब ये पूरी तेजी से आगे नहीं बढ़ सकती थीं, फिर भी ये हर कठिनाई का साहस और धैर्य से मुकाबला करते हुए आगे बढ़ती रहीं। अंततः 23 मई, सन् 1984 को दोपहर एक बजकर सात मिनट पर वे एवरेस्ट के शिखर पर थीं। इन्होंने विश्व के उच्चतम शिखर को जीतने वाली सर्वप्रथम पर्वतारोही भारतीय महिला बनने का अभूतपूर्व गौरव प्राप्त कर लिया था।

एक प्रेसवार्ता में जब सुश्री बछेंद्री पाल से यह पूछा गया कि "एवरेस्ट पर पहुँचकर आपको कैसा लगा?" इन्होंने उत्तर दिया- "मुझे लगा मेरा एक सपना साकार हो गया।"

एवरेस्ट विजय के पहले सुश्री बछेन्द्री पाल एक महाविद्यालय में शिक्षिका थीं। लेकिन एवरेस्ट की सफलता के बाद भारत की एक 'आयरन एण्ड स्टील कम्पनी' ने इन्हें खेल सहायक की नौकरी की खुद पेशकश की। इन्होंने इस आशा के साथ यह प्रस्ताव स्वीकार किया कि यह कम्पनी इन्हें और अधिक पर्वत शिखरों पर विजय पाने के प्रयास में सहायता, सुविधा तथा प्रेरणा प्रदान करती रहेगी। इस समय सुश्री पाल 'टाटा स्टील एडवेन्चर फाउन्डेशन' नामक संस्था में नई पीढ़ी के पर्वतारोहियों को प्रशिक्षण देने का कार्य कर रहीं हैं।

महिलाओं द्वारा पर्वतारोहण का सिलसिला बछेन्द्री पाल के बाद रुका नहीं। उनसे प्रेरणा पाकर हरियाणा के इंडोतिब्बत पुलिस बल के अधिकारी पद पर कार्यरत सुश्री संतोष यादव ने सन् 1992 ई0 और 1993 ई0 में लगातार दो बार एवरेस्ट की सफल चढ़ाई की।

अन्य भारतीय महिला पर्वतारोही

कु0 चन्द्रप्रभा अटवाल	इन्होंने 24,645 फुट ऊँचे नंदा देवी पर्वत

सुश्री हर्षवंती विष्ट शिखर पर विजय प्राप्त की।

कु0 रेखा शर्मा

संतोष यादव

अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित

कु0 चन्द्रप्रभा अटवाल

सुश्री हर्षवंती विष्ट

पद्मश्री पुरस्कार

तेनजिंग नोर्गे नेशनल एडवेंचर अवार्ड

अरुणिमा सिन्हा

अभ्यास

1. शेरपा तेनजिंग को पर्वतों की किस बात ने सबसे ज्यादा प्रभावित किया होगा ?
2. बछेन्द्री पाल ने पर्वतारोहण का प्रशिक्षण कहाँ से प्राप्त किया ?
3. भारत की दो महिला पर्वतारोहियों के नाम बताइए।

योग्यता विस्तार

स अपनी कक्षा में अपने द्वारा किए गए अब तक के सबसे कठिन, साहसिक कार्य के विषय में कुछ पंक्तियाँ बोलिए।

स आप कौन-सा साहसिक कार्य करना पसंद करेंगे ? विस्तार से कारण सहित लिखिए।

स एवरेस्ट का प्राचीन नाम क्या है ? इसका नाम एवरेस्ट कैसे पड़ा ?

E-BOOKS DEVELOPED BY

1. Dr.Sanjay Sinha Director SCERT,U.P,Lucknow
2. Ajay Kumar Singh J.D.SSA,SCERT,Lucknow
3. Alpa Nigam (H.T) Primary Model School, Tilauli Sardarnagar,Gorakhpur
4. Amit Sharma (A.T) U.P.S, Mahatwani ,Nawabganj, Unnao
5. Anita Vishwakarma (A.T) Primary School ,Saidpur,Pilibhit
6. Anubhav Yadav (A.T) P.S.Gulariya,Hilauli,Unnao
7. Anupam Choudhary (A.T) P.S,Naurangabad,Sahaswan,Budaun
8. Ashutosh Anand Awasthi (A.T) U.P.S,Miyanganj,Barabanki
9. Deepak Kushwaha (A.T) U.P.S,Gazaffarnagar,Hasanganz,unnao
10. Firoz Khan (A.T) P.S,Chidawak,Gulaothi,Bulandshahr
11. Gaurav Singh (A.T) U.P.S,Fatehpur Mathia,Haswa,Fatehpur
12. Hritik Verma (A.T) P.S.Sangramkheda,Hilauli,Unnao
13. Maneesh Pratap Singh (A.T) P.S.Premnagar,Fatehpur
14. Nitin Kumar Pandey (A.T) P.S, Madhyanagar, Gilaula , Shravasti
15. Pranesh Bhushan Mishra (A.T) U.P.S,Patha,Mahroni Lalitpur
16. Prashant Chaudhary (A.T) P.S.Rawana,Jalilpur,Bijnor
17. Rajeev Kumar Sahu (A.T) U.P.S.Saraigokul, Dhanpatganz ,Sultanpur
18. Shashi Kumar (A.T) P.S.Lachchhikheda,Akohari, Hilauli,Unnao
19. Shivali Gupta (A.T) U.P.S,Dhaulri,Jani,Meerut
20. Varunesh Mishra (A.T) P.S.Madanpur Paniyar,Lambhua,Sultanpur